30/6/1965 बुधवार प्रातः क्लास

रिकॉर्ड :– माता माता माता! तू सबकी भाग्यविधाता.....

(ओम)शांति! यह माँ की और माँ की बच्चियों की महिमा सुनी है। गाई हुई है; क्योंकि माताओं को ही गुरूपने का वर्सा मिलता है। माताओं बिगर किसका उद्धार होना मुश्किल है। अभी एक माता तो नहीं है। माता गुरू का सिलसिला जारी हुआ तो एक माता तो नहीं सर्विस करती है ना। ये सभी माताएँ...। अभी ये हो गई जैसे महा नॉलेज या मास्टर नॉलेजफुल कहें, रास्ता बताने वाली। यूँ गुरू कहे जाते थे। गुरू करना है सद्गति के लिए। अभी बाप ने आ करके बच्चों को समझाया कि कोई भी मेल गुरू किसकी भी सद्गति नहीं कर सकते हैं। न गति कर सकते हैं, न सद्गति कर सकते हैं। माताएँ मशहूर हैं– शिवशक्ति जगदम्बा। अभी ये तो बच्चों ने समझा है कि बरोबर माँ, जिसकी महिमा आज निकली है, वो प्रिंसीपल थी, मुख्य थी और उन द्वारा फिर आप बच्चे भी सीखे हो। ये सीखने की बात हुई ना। तो बहुत ही नंबरवार पुरुषार्थ अनुसार कल्याण करने अर्थ वा रास्ता बताने अर्थ निमित्त बनी हुई हैं वा ऐसे भी कहें कि पतितों को पावन बनाने ये माताएँ निमित्त बनी हैं; क्योंकि गुरू कहा ही जाता है उनको जो सद्गति देवे। अभी ये तो बच्चे जान चुके कि ये सभी गपोड़े मारते थे कि फलाना निर्वाणधाम में गया, ज्योति ज्योत समाया या कोई गपोड़े कहते थे कि वैकुण्ठवासी हुआ। अभी तुम जान गए हो कि न कोई वैकुण्ठवासी होते रहते हैं, न कोई ज्योति ज्योत में समाते हैं, न कोई निर्वाणधाम में जाते हैं। ये तो तुम बच्चों को सब अच्छी तरह से मालूम हुआ कि ये सभी गपोड़े मारते थे। अब जबकि बाप आए हुए हैं, जिसको ही कहा जाता है सर्व का सद्गति दाता, फिर ये माताओं द्वारा...गाया भी हुआ है बरोबर.....माताओं की महिमा बहुत भारी है, गाई जाती है। तो अभी इस समय ही गाई गई है जो फिर भक्तिमार्ग में गाई जा रही है। जगदम्बा की तो महिमा बहुत है। कोई एक की तो नहीं, देवियाँ तो बहुत ही हैं। भिन्न–2 प्रकार के नामों के देवियों के मंदिर हैं, अनेक नाम हैं। समझा ना। तुम अगर कोई निकालेंगे तो भिन्न–2...। यहाँ नाम नहीं लेते हैं, सिर्फ कह देते हैं– अधरकुमारी, कुमारी। हम नाम तो कुछ देते ही नहीं हैं। कुछ देते हैं? क्योंकि यहाँ तो बहुत हैं, ढेर हैं। तो वहाँ भक्तिमार्ग में देवियों के ही चित्र निकलते हैं। ऑक्युपेशन किसका भी पता नहीं था। ये देवियाँ ऐसी कौन थीं, कैसे बनीं, कब बनीं– ये कोई भी पता नहीं पड़ता है और तुम बच्चे अभी बिल्कुल अच्छी तरह से जान चुके। जो भी ये देवी–देवताओं के मंदिर हैं, श्री लक्ष्मी–नारायण के मंदिर हैं, ये भी देवी–देवता हुए वा और भी जो श्री सीता और श्रीराम के मंदिर वा और भी देवियों के मंदिर (हैं), देवी और देवताओं के ही तो मंदिर हैं ना। तो अभी तुम बच्चे सिर्फ जान चुके, जो–2 अच्छे सेन्सीबुल बच्चे हैं, जो उठा सकते हैं कि बरोबर ये जो भी देवी–देवताओं के मंदिर हैं, ये बरोबर पहले ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ थीं और उसके पहले शूद्र थे, पतित थे। पीछे ब्राह्मण बने। ब्राह्मण धर्म में आ करके और फिर शिक्षा पाय देवता बने हैं। देखो, ये कितनी बड़ी रोशनी समझ की बात है। अभी ये तुम जानते हो जब देवता बन जाएँगे तो भक्तिमार्ग के चित्र, शास्त्र वगैरह कुछ होंगे ही नहीं। पीछे ऐसे नहीं हो सकता है कि परम्परा से कोई ये चित्र आते रहते हैं या परम्परा से कोई शास्त्र है या परम्परा से कोई ये त्यौहार मनाते आते हैं। तुमको वहाँ कोई शिवजयन्ती त्योहार मनाने की दरकार नहीं रहेगी। न कृष्ण जयन्ती, न हनुमान जयन्ती, फलाना–2 जयन्ती कोई की भी मनाई नहीं जाएगी। अभी मम्मा की बहुत महिमा (है)। ये तो समझते हो कि बरोबर सबसे तीखी थी। ऐसे कहेंगे ना (कि) तीखी थी। अब उसकी आत्मा कहाँ है? प्रश्न उठाते हैं ना कि यह कहाँ जा करके जन्म लिया? अभी अपन बच्चे कोई अच्छा–2 जाते हैं, जैसे गाँधी भी गया या फलाना गया, हम बाबा से पूछते हैं (कि) आत्मा कहाँ गई? तो वैसे ही अभी यह मम्मा की आत्मा कहाँ गई?– यह भी तो बाप से पूछना होता है ना। तो बाप बैठ करके फिर समझाते हैं कि बच्चे, देखा तो सही ड्रामा में कि इनको शरीर को छोड़ना हुआ। जो भी इनके कड़े कर्म थे वो भोगना भी पड़ा और बाप भी यह कहते रहते हैं कि बच्चे, योग में अच्छे रहो, याद में अच्छे रहो। विकर्म बहुत हैं। पीछे नहीं तो कुछ भोगना पड़ेगी और फिर सज़ा खानी पड़ेगी। अभी इस मम्मा को तो सज़ा खाने का है नहीं। जा करके सज़ा खाए या इनके लिए ट्रिबुनल बैठे, सो तो हो भी नहीं सकता है। अच्छा, अभी पूछा तो जाता है ना। बाप से सब कुछ पूछना पड़े। अभी जो कुछ भी है, बाप से पूछते हैं। बाबा, अभी यह आफ़त आती है, क्या करें? अब यह होता है, क्या करें? यह विघ्न पड़ता है, क्या करें? बरोबर पूछते तो रहते हैं ना। हर बात पूछी तो जाती है; क्योंकि जो–2 भी

समझदार हैं, अच्छे–2 बच्चे हैं, वो तो पूछ भी सकते हैं। मम्मा के लिए भी बाबा से पूछा जाएगा कि क्या मम्मा से कोई बातचीत कर सकते हैं? बुलाय सकते हैं? भला क्यों नहीं? वो अभी कोई जन्म तो लिया नहीं है। अभी तो उनको बाबा ने कल भी समझाया कि बाबा कहते हैं जैसे मैं सेवा कर रहा हूँ। कर रहा हूँ ना! कोई भी पापआत्मा में प्रवेश कर लेता हूँ। हैं तो सभी पापआत्मा ना। देखो, ये भी तो बाबा कहते हैं ना कि बाबा...था ; परंतु अभी पुण्यआत्मा बनते रहते हैं, पवित्र बनते रहते हैं। वो तो समझाया ना (कि) मैं कर्मातीत अवस्था...। यह तो ज़रूर समझेंगे कि मम्मा अभी कर्मातीत अवस्था में चली गई। अभी बाप से पूछा जाता है कि आज मम्मा का यह गीत निकला है, तो समझाया जाता है; क्योंकि बच्चे बहुत मूँझते हैं कि यह क्या हुआ, तो बाप बोलते हैं कि नहीं, तुम्हारा दर्जा दिन–प्रतिदिन बहुत ऊँचा है। जैसे तुम बाबा के लिए कहते हो कि बहुत ऊँचा है। तो जगदम्बा के नेक्स्ट में ऊँचा है। ये भी बच्चे जानते हैं कि ब्रह्मा का भी इतना ऊँचा नहीं है। अभी उनको ऊँच भला कैसे दिखलाया जाए? तो बाप से ही पूछना पड़े। अभी माताओं का, जगदम्बा का तो देखो कितने मेले लगते हैं! उनकी कितनी महिमा है! तो ज़रूर कुछ ऊँची सर्विस की होगी.... बहुत कुछ मदद की होगी, बहुत पतितों का कल्याण किया होगा, यह भारत की बहुत ही सर्विस की होगी जरूर। तो बाबा, अभी कैसे सर्विस करती होगी? क्या कहाँ कोई गर्भ में चली गई? क्या हुआ? तो बाप से पूछा जाता है। बाप कहते हैं– नहीं बच्चे, इनसे तो अभी जैसे मैं कर्म करता हूँ ना; क्योंकि यह तो यहाँ से खतम हुई, खलास। शरीर में तो जा नहीं सकती है। मूत पलीती तो बन नहीं सकती है। यह भी बिल्कुल लॉ के विरुद्ध है। अभी उनसे हमको ड्रामाअनुसार, जैसे मैं इनसे सेवा करता हूँ प्रवेश हो करके, इसमें भी आ सकते हैं, कोई में भी आ सकते हैं और मुरली चलाते हैं। महसूसता होती है कि हाँ, आज इनकी मुरली...। बच्चे भी महसूस करते हैं। तो बाबा कहते हैं ये भी ऐसे ही है नेक्स्ट में; क्योंकि बाप इनसे भी जास्ती मर्तबा इनको देते हैं। बोलते हैं (कि) अभी इनसे मैं जैसे सर्विस करता हूँ वैसे यह भी सर्विस कर सकती है। जैसे मैं अपने निर्वाणधाम में जाता हूँ वैसे यह भी मेरे साथ जा सकती है। इनका इतना तक ऊँचा मर्तबा है। गाया जो है तो कोई तो बात होगी ज़रूर। तो बार–2 मेरे से पूछते रहो, मैं समझाता रहूँगा। मूँझने की कोई दरकार नहीं है। ये बरोबर कोई संदेशी द्वारा पूछना भी तो होता है। ये तो बाप पूछते रहते हैं बाबा से कि अभी इनके लिए कौन–सा संदेशी मुकर्रर करते हो? मैं बोलता हूँ– हाँ, एक मुकर्रर कर देना होता है। पीछे जैसे इनका एक मुकर्रर है ये, एक इनका भी मुकर्रर होगा; परन्तु यह भी कोई के शरीर में जा सकती है, कोई के भी बड़े–2 के दल में जा करके प्रभावित कर सकती है, मुरली बजा सकती है। आहिस्ते–2 करके पार्ट तो इनका चलना ही है; परन्तु अभी बोलते हैं कि जैसे मेरा पार्ट है ना, यह सूक्ष्मवतन में भी रहनी है और जा करके मेरे साथ अपने मूलवतन में भी जा सकती है, फिर आ सकती है। जैसे फिर बाबा से सब कुछ पूछा जाता है ना। बोलते हैं (कि) देखो, कभी कोई आत्मा भटकती है, जिसको फिर घोस्ट भी कहते हैं। कोई दुःख देने वाला होता है, कोई सुख देने वाला होता है, कोई कैसा होता है। बरोबर ऐसे है ना। अभी तुम्हारी आत्माएँ भटकने वाली तो नहीं हैं। भटकने वाली हैं अगर ज्ञान नहीं है तो। अगर ऐसे प्रवृत्ति में न आई है। अभी यह तो प्रवृत्ति में आ गई है तो इसको भटकना नहीं कहेंगे। यह फिर सर्विस के लिए...। आत्माएँ तो प्रवेश करती हैं ना। तो यह प्रवेश करके यह कार्य करती रहेगी। हूबहू जैसे मैं और मेरा नेक्स्ट में यह। तो ऊँचा मर्तबा दे दिया ना। इनसे भी पहले इनको ऊँचा मर्तबा दिया। है भी इनसे पहले उनका ऊँचा मर्तबा। पहले जगदम्बा। यूँ पीछे भी तो इनका ऊँचा मर्तबा है और बच्चे देखते भी हैं कि जगदम्बा का मर्तबा यहाँ भी बहुत बड़ा है। इनके बहुत मेले वगैरह लगते हैं। तुमने कभी भी नहीं सुना है कि ब्रह्मा का कोई मेला लगता है। लगता है? यह क्यों? यह बाप बताते हैं कि इनका ऊँचा मर्तबा है, इनकी सर्विस ऊँची है। माताओं की महिमा बहुत बड़ी होती है। जैसे आजकल माताओं को पहले मर्तबे देते हैं। देखो, अब कोई वक्त में प्रेसिडेंट भी बना देंगे, प्राइम मिनिस्टर भी बना देंगे। इस समय माताओं का मर्तबा जैसे बाप आ करके रखते हैं वैसे जिस्मानी में भी ऐसे हो गया है। जहाँ–तहाँ देखो। आगे कभी भी नहीं सुनेंगे। इतनी राजाइयाँ–बादशाहियाँ हो गई है, कभी भी कोई प्राइम मिनिस्टर फिमेल नहीं बनी है। हाँ, राजा–रानी बनी हैं। तुमने सुना होगा राजा–रानी वज़ीर। वज़ीर कभी माता नहीं, वज़ीर फिर भी पुरुष बनते हैं। यहाँ तो देखो आजकल सब जगह में माताओं को उठाते रहते हैं। प्राइम मिनिस्टर, फिर प्रेसिडेंट, फलाना, लड़ाई के ऊपर में भी उन लोगों को रख देते हैं;

क्योंकि इस समय जब बाप आ करके मर्तबा उठाते हैं तो उन लोगों का भी मर्तबा ऊँचा होता जाता है। जैसे कि माताओं की जो इतना दासियाँ करके रखते आए हुए हैं, बस घर में काम–काज, बुहारी करो, यह धंधा करो और वो अपना मालिक बनते हैं और बच्चों को मालिक बनाते हैं। दिन–प्रतिदिन माताओं की इज्ज़त कमती होती गई है। माताओं को गुरू करना पड़ता है। बहुत माताएँ करती हैं ना। कितनी और कितनी माताओं की गुरुओं द्वारा दुर्गति होती है। बहुत दुर्गति होती है। न सिर्फ बाप से बुद्धियोग तोड़ करके अपने में जोड़ते हैं ; परंतु उनसे बहुत सेवा लेते हैं। घरबार छोड़ करके फिर उनसे बहुत सेवा लेते हैं। स्थूली सेवा भी लेते हैं और गंद की सेवा ले लेते हैं। तो बाबा को माताओं का तो मर्तबा ऊँचा करना है ना और इन्हीं माताओं से उनका उद्धार होना है। यह भी तुम जानते हो कि बरोबर भीष्मपितामह, द्रोणाचार्य वगैरह–2 इनका भी उद्धार माताओं द्वारा ही गाया हुआ है। बाबा समझाते रहते हैं कि इन सब बातों में बच्चों को मूँझना–घबराना ये कुछ करने का नहीं है; क्योंकि बाप बैठे हैं, उनसे हम लोगों को श्रीमत मिलनी है। जो कुछ भी होता है तो बाप से ही मत मिलेगी (कि) अभी क्या करना है। तो बाप बोलते हैं (कि) वो तो है। जैसे कहते हैं ना– अभी इस समय में हाजिराहजूर। शिवबाबा है ना। हाजिराहजूर अभी कहेंगे ना। हाँ, हम हाजिराहजूर हैं, हम देख सकते हैं, हम सुन सकते हैं। तो वैसे बाबा कहते हैं कि यह भी हाजिराहजूर हो गई; क्योंकि इनको तुम मिल सकते हो, बुद्धि से जान सकते हो कि बरोबर आज यह मम्मा आई है। जो भी अनन्य हों मम्मा से प्रश्न पूछ सकते हैं; क्योंकि कायदे अनुसार तो प्रश्न..... देखो, बाबा जैसे बाअदब। बाबा को मँगाकर पूछते हैं। बाअदब अच्छी तरह से पूछेंगे ना। फिर भी तो सुप्रीम है ना ऊँचे ते ऊँचा। तो मम्मा भी ऊँची ते ऊँची हो गई। कोई बोलता है कि कहाँ भी कोई भी बड़ी सभा हो तो उसमें प्रवेश कर वो अच्छी तरह से समझा सकती है; क्योंकि अभी कोई भी मुकर्रर किया जाएगा। सही करना होता है तो सरस्वती का नाम डालते हैं। अभी सरस्वती तो नहीं है। तो कोई को मुकर्रर करना होगा कि फॉर जगदम्बा सरस्वती; क्योंकि वो तो अभी है नहीं ना। तो फॉर भी कर सकते हैं। नहीं तो फॉर कोई भी करते नहीं हैं। जब चली गई है तो फॉर..... बाप कहते हैं कि यहाँ तुम फॉर भी कर सकते हो। वो तो हाजराहजूर है। अभी हाजिराहजूर है, सर्विस कर रही है। बाप भी हाजराहजूर हैं, सर्विस कर रहे हैं। नहीं तो जो कहते थे हाजराहजूर हैं, हम कोर्ट में जा करके क्या कहते हैं? हाज़िर–नाज़िर। अभी नाज़िर तो कोई होता ही नहीं है, कोई चीज़ है नहीं। बाप अभी हाज़िर है, नाज़िर है। तैसे फिर अभी इस समय में मम्मा भी हाज़िर है, नाज़िर है। वो तो गपोड़े थे। अभी की जो हाज़िर और नाज़िरपना है वो फिर भक्तिमार्ग में गाया जाता है– भई, ईश्वर हाज़िर–नाज़िर (है)। अभी तो है नहीं ना। तो ज़रूर प्रैक्टिकल में हाज़िर और नाज़िर थे। तो देखो, मम्मा भी फिर हाज़िर और नाज़िर रही ना। ऐसे कोई थोड़े ही कहेंगे कि चली गई। नहीं, वो तो सर्विस कर रही है ना। सर्विस भी तो आत्माएँ करती हैं ना। हाँ, यह शरीर छोड़ करके फिर जैसे कि उनका ऊँचा पद हो गया। वो भी हाज़िर है, नाज़िर (है)। देखो, यह सब बाबा से पूछा जाता है ना और बाप भी आ करके समझाते रहते हैं (कि) अभी वो हाज़िर भी है, नाज़िर भी है और उनको अपनी सर्विस करनी है। जैसे मैं करता हूँ तैसे वो करते रहेंगे। जैसे मैं बहुत–2 बच्चों में प्रवेश करता हूँ। कोई बिल्कुल ही थर्ड ग्रेड बच्ची होती है और उसके सामने कोई ऐसा समझने वाला आ गया है, जिससे कुछ काम कराना होता है तो बाप प्रवेश करके...। बाबा बोलते हैं अभी यह भी प्रवेश करके हूबहू जैसे मेरा कार्य करती रहेगी। पीछे तुम बच्चों को तो और ही खुशी होनी चाहिए। वो ज़्यादा सर्विस पर गई है। तुम्हारी है ही अभी सर्विस का– कल्याण करना, अंधों की लाठी बनना। अभी तुम्हारा धंधा ही यह हो गया। पतित–पावनी माताएँ हो गईं। उसमें फिर गंगा–जमुना ये तो अभी तुम्हारा नाम है ना। देखो, पतित–पावनी अभी गुलज़ार, पतित–पावनी यह गंगा, पतित–पावनी यह शांता। ये सभी पतित–पावनियाँ हैं ना। तो ह्युमिनिटी की बात है ना। पानी की तो कोई बात नहीं है। अभी ये बातें तो तुम बच्चे जानते हो, दुनिया तो और कुछ भी नहीं जानती है। वो तो अनेक प्रकार के संशय वगैरह करते ही रहेंगे; क्योंकि सभी नई बातें हैं। अभी तुमने नई बातें सुनीं ना। बाबा ने ऐसे कुछ सुनाया था? ऐसी बातें कभी कुछ ख्याल में थीं? बच्चों को समझ में आती है कि बरोबर बाबा ने....? मम्मा का ऊँच पद हो गया और उनको बहुत सर्विस करनी है। जैसे मैं सर्विस कर(ता हूँ) ऐसे मम्मा के बाद कोई और भी जाएगा, कोई अच्छा अनन्य जा सकता है। तुम जाएँगे तो सर्विस के लिए ना। कहाँ भी जाएँगे

तो तुमको सर्विस करनी है। इस जन्म में सर्विस करनी है। जब ये पूरा होगा तब फिर कहा जाता है कि जहाँ जीत तहाँ ये फिर जाएंगी। अभी तो नहीं जाएंगी ना। अभी तो जीत की कोई बात नहीं है। अभी तो लड़ाइयाँ चल रही हैं। बाबा कहते हैं ये एक का मिसाल नहीं है। यह तो होता रहेगा। तुमको तो फिर भी सर्विस ही करनी है। बच्चों को ये जो संशय की बात है या वो माँ को याद करते हैं; परन्तु फिर उस समय कहते हैं (कि) ज्ञान से याद करो कि हमारी माँ अब शरीर छोड़ बाबा द्वारा बहुत कुछ सर्विस कर रही है। अब ये तो है आत्माओं की बात। अभी तो तुम आत्मअभिमानी बने। आत्मा ही अभी सर्विस करती है। तुम्हारा देहअभिमान तो टूटा। वो तो कहेंगे कि ये पण्डित संस्कार ले करके दूसरा शरीर धारण कर फिर बैठ करके कथाएँ सुनाएँगे, मनुष्य अजब खाएँगे, वण्डर खाएँगे। अभी ये तो सभी हैं गुप्त बातें। ये जिस्मानी बातें तो हैं नहीं। तुम्हारी सर्विस...सारी है। देखो, कोई जानते हैं कि तुम क्या करते हो ? तुम ही जानते हो कि हमारे से बाप कैसी सर्विस करा रहे हैं, कैसे हमको ज्ञान दे रहे हैं। यहाँ भी तो... वो तो गाया जाता है ना– ईश्वर की मत–गत न्यारी। है ना बरोबर। बाप भी इन(में) बैठ करके ये सब कुछ समझाते रहते हैं। अभी मनुष्य तो इन बातों को नहीं जानते हैं। हमारे बच्चे भी कई हैं जो बिचारे क्या जाने, उल्टे–सुल्टे प्रश्न पूछते रहते हैं– क्या हुआ फलाना। या हुसैन मचाते रहते हैं। खुद भी अपने लिए या हुसैन मचाते हैं, तो औरों को भी या हुसैन मचाने लगाय पड़ते हैं। यह क्या है, वो क्या है, फिर आपस में म्याऊँ–2 करते रहते हैं। कभी बाबा को भी लिखते रहते हैं– बाबा, ये क्या हुआ? मम्मा क्यों गई? आप तो कहते थे मम्मा तो अंत तक रहेगी। बाबा कहाँ कहते हैं अंत तक न रहेगी? यहाँ तो फिर शरीर की तो बात ही नहीं है। यहाँ आत्मा तो रहती है अंत तक ; क्योंकि अभी आत्मा का ज्ञान...। जिसको देहअभिमान होता है वो फिर ये बातें करते हैं। जो आत्मअभिमानी हैं उनको तो नहीं। फिर भी नई बात होती है तो बाप कहते हैं मैं आ करके तुम बच्चों को समझा(ता हूँ)। मूँझते क्यों हो? तुमको मूँझने की तो दरकार नहीं है, जबकि समझाने वाला नॉलेजफुल। यह सब नॉलेज देते हैं ना। अभी देखो, यह नॉलेज दे रखे हैं ना, समझा रहे हैं कि वो क्या करती है। वो आएंगी, तुम उनको बुला सकते हो। भले भोग लगाते हो, तुम उनको बुला सकते हो। हाँ, इतना ज़रूर है कि वो इतना कुछ तुम्हारे माफिक बैठकर खाएगी–करेगी नहीं। ...सुगंध करेगी। बहुत बड़े आदमी होते हैं, कोई भी थाली रखी होगी, बस, इतना हो गया। ऐसे होता है ना। यह भी तो है बड़े के लिए। बाबा को भी कभी बुलाते हैं। वो तो खाता भी नहीं है, वो लेता नहीं है। हाँ, ये ले सकती है; क्योंकि मैं तो कभी भी... मैं तो हूँ ही अभोक्ता। तुम्हारी मम्मा अभोक्ता तो नहीं है ना। वो तो खा सकती है। मैं नहीं खा सकता हूँ। तुम मम्मा को कुछ भी खिलाओ ; परन्तु थोड़ा खाएगी, जैसे कोई रॉयल्टी से खाते हैं ना। तुम माँ से बात भी कर सकते हो; परन्तु रॉयल्टी से। ज्ञानवान कोई उल्टे–सुल्टे प्रश्न बैठकर नहीं पूछे। जैसे कोई सभा में नया आता है (तो) जो आता है सो प्रश्न पूछ लेते हैं; क्योंकि उनको ज्ञान का तो कुछ पता है नहीं। तो बाप बच्चों को समझाते रहते हैं कि तुम्हारी मम्मा कोई गई थोड़े ही है। तुम तो अमर बनते हो। तुम जानते हो कि हम अमर बनते हैं। हम फिर दूसरा शरीर धारण कर और अभी राज्य भी करने वाले हैं। तो तुम अमर बन गए ना। मम्मा भी तो अमर बन गई। तुम बच्चों को तो और ही खुशी होनी चाहिए। बाप कहते हैं– बच्चे, हम बच्चों से बहुत ऊँच कार्य कराने वाला हूँ। मैं आया हूँ बच्चों से इस सृष्टि का कल्याण कराने। मुझे बच्चे बहुत प्यारे हैं। उनकी महिमा मैं बहुत जोर से कराऊँगा। यह भी जिस समय में कोई में प्रवेश करके बात करेगी तो तुम झट समझ जाएँगे कि यह माँ की...। आवाज़ तो फिर जाती है ना; क्योंकि शरीर तो दूसरा हो गया। उनकी आवाज़, उनके ऑरगन्स तो अभी नहीं हैं। तो ज़रूर अभी जैसे यहाँ बाबा प्रवेश करते हैं, उनका तो कोई आवाज़... आवाज़ तो फिर भी जिसमें प्रवेश करेगा उनका निकलेगा ना; क्योंकि उनके वो ऑरगन्स फिर चले गए ना, जो बजते थे। तो ज़रूर दूसरे से बजाएँगे। तो जैसे पितर खिलाते थे। अच्छा, जो सोल्स आते हैं, उनका आवाज़ वो तो नहीं रहेगा। उनके ऑरगन्स तो छूट गए। यह भी ड्रामा में पार्ट तो है ना कि आत्मा आ करके बोलती है बरोबर। अभी तो कम बोलते हैं। अभी तो विघ्न भी पड़ते हैं। अभी तो माया का भी प्रवेश उनमें हो जाता है। नहीं तो आगे वो आत्माएँ

बहुत अच्छी तरह से यहाँ आ करके समाचार सुनाती थीं, पूछते थे, सब कुछ करते थे। अभी तो दिन–प्रतिदिन माया की प्रवेशता... यानी झूठ मिक्स्चर होती जाती है। अभी तुम्हारे में तो कोई झूठ की तो नहीं...। यूँ तो तुम्हारे पास भी यहाँ बहुत बच्चियाँ हैं जो ध्यान में जाती हैं, उनमें भी माया की प्रवेशता आ जाती है। तो वो समझा जाता है। अभी यहाँ तो ज्ञान की ये बातें हैं। सो वो आएगी तो एक्यूरेट ही करेगी। जो कुछ भी करेगी तो एक्यूरेट। उनकी बाबा खातिरी देते हैं कि वो तो एक्यूरेट हो गई। अभी यहीं है। बाबा से पूछो, बोलते हैं (कि) वो तो निर्वाणधाम में भी जा सकती है, मेरे साथ आ सकती है, जैसे मैं...और हो सकता है कि तुम्हारे से भी कोई आ जाए। सूक्ष्मवतन में जाए, निर्वाणधाम में भी जाए, सूक्ष्मवतन में रहे। जो तीखी–2 होंगी, जिसकी कर्मातीत अवस्था बनी हुई होगी, वही तो निर्वाणधाम में जा सकेंगी ना। बाबा देखते हैं, बोलते हैं (कि) निर्वाणधाम में भी जा सकती हैं, नहीं तो कोई भी नहीं जा सकते हैं जब तलक कर्मातीत अवस्था में न पहुँचे हैं। इसलिए तुम मम्मा के लिए इतना समय फिकरात न करो। यह ड्रामा में पार्ट ऐसा है, मैं समझाता रहता हूँ। मेरे से पूछो। संकल्प–विकल्पों में, घुटकों में मत आओ। मेरे से पूछते रहो और आगे चल करके देखते रहो। बरोबर आते हैं मम्मा को...। आगे शुरुआत में किसको बुलाते थे? नारायण को बुलाते थे, लक्ष्मी को बुलाते थे और शहज़ादे को बुलाते थे। वो आ करके भोजन करते थे। वो तो वहाँ सम्पूर्ण देवताओं को मँगाते थे। अभी मम्मा देवता तो नहीं बनी है, लक्ष्मी तो नहीं बनी है ना। है लक्ष्मी, बरोबर उनका पार्ट चला है। तुम जानते हो कि बरोबर वो आती थी। अभी इनका पार्ट है सर्विस का। तुम जानते हो कि सर्विस के पार्ट के बाद यह लक्ष्मी बनेगी, जिसको हम लोग शुरुआत में बुलाते थे कि बाबा, इनको बुलाओ, हम निमंत्रण देते हैं। तो देखो, जबकि देवताओं को निमंत्रण दे सकते हैं तब तलक जो अभी सूक्ष्मवतनवासी रहते हैं उनको भी तो निमंत्रण दे सकते हैं ना। बाबा कहते हैं कि वो घूमती है, मेरे साथ जाती हैं। मैं भक्तों के पास जाता हूँ। उनको इन द्वारा दीदार कराता हूँ। तुम आगे चलकर बहुत ही वण्डरफुल बातें सुनेंगे। तुम्हारी महिमा तो निकलनी है ना। अरे बड़े–2 देखो, एक दिन उसने कहा कि यह देवी से आवाज़ आती है कि मैं ब्रह्माकुमारी हूँ, आग निकलती है, फलाना होता है। ये भी तो वण्डरफुल चरित्र निकलते थे। आगे तो बहुत कुछ होने का है। बोलते हैं पेशेन्स रखो। वेट एण्ड सी। चलते चलो, अटेंशन अपनी पढ़ाई में रखो; क्योंकि बहुतायत पढ़ना तुमको है। बच्चों की बहुत ही ढीली–2 अवस्था है। देखो, मुझे याद ही नहीं कर सकते हैं। ये इंजाम भी करते रहते हैं। आधाकल्प अंजाम किया है। जब आया हुआ हूँ, कहता हूँ कि मुझे याद करो, भूल जाते हैं। उनको यह तो समझना चाहिए कि कहते हो कि जब आप आएँगे, मेरे तो एक दूसरा न कोई। ये तो पार्ट बजेगा ना। कहते आए हैं सो प्रैक्टिकल में बजेंगे। सतयुग में तो नहीं कहते हैं (कि) मैं कुर्बान जाऊँगी....। यह तो भक्तिमार्ग में कहते हैं ना (कि) वारी जाऊँगी, तुम्हारा बलिहार जाऊँगी, तेरे सिवाय और मेरा कोई भी नहीं रहेगा। तो देखो, अवस्था चाहिए ना। अब यह तो जानते हो कि बरोबर मम्मा की ऐसी अवस्था थी। बस एक शिवबाबा के सिवाय और तो कोई भी नहीं था। हाँ, कुछ समय लगना होता है। अभी तो कर्मातीत अवस्था कोई सबकी तो फाइनल नहीं हुई है; परन्तु नहीं, इनकी कुछ भोगना भोगकर भी... क्योंकि सज़ाएँ नहीं खानी हैं। बाबा ने कह दिया है इतनी मेहनत करनी है, इतनी मेहनत करनी है, जो तुम्हारे लिए ट्रिब्यूनल न बैठे सज़ा के लिए। अभी यह तो मम्मा के लिए नहीं बैठ सकती है ना। तो देखो, इसलिए मम्मा को बाबा ने... यह ड्रामा में पार्ट नूँधा हुआ है। कल्प–2 फिर भी तो यह होगा। यही बातें तुम फिर सुनेंगी कल्प.. समझने के लिए। आगे चलकर तो जो ड्रामा है वो खुलता जाएगा। यह थोड़े ही मालूम रहता है कल क्या होगा। बाबा से पूछते हैं, वो खुद बोलते हैं कि हम कल की बात तुमको कैसे बताएँगे, जबकि ड्रामा में मेरा पार्ट जब खुलेगा, जो कुछ होगा वो मैं ड्रामा अनुसार बोलूँगा। अब कल मैं क्या बोलूँगा? ड्रामा अनुसार जो बोलना होगा सो बोलूँगा ना। मैं ऐसे कैसे बोल सकता हूँ। हाँ, मैं समझानी देता रहता हूँ; परन्तु फिर भी मेरा भी तो पार्ट...। तुम्हारा भी रोज़ जो भी पार्ट है सो सेकेण्ड ब सेकेण्ड तुम्हारी एक्टीविटी, चलन सब फिरता ही रहता है। यह जानते हो कि ड्रामा है। बाबा ने समझाया था देखो ऐसे–2 करते हैं, अभी तुम बच्चों से बात करते हैं, फिर भी कल्प

पहले ऐसे ही बात करेंगे। बाबा भी तो कहते हैं कि जैसे कल्प पहले तुम बच्चों को शुरू से लेकर अंत तक समझाया था, वैसे ही तो मेरा पार्ट चलेगा। उनमें कोई फर्क थोड़े ही पड़ेगा। इसलिए ड्रामा का जो कुछ भी पार्ट चलता है, उनको भी तो साक्षी होकर देखना भी है और ऐसे भी कोई बच्चा मुश्किल होता है जो उनको सारा दिन बुद्धि में रहता है– यह पार्ट जूँ के मिसल चल रहा है और जो कुछ भी सारी वर्ल्ड में होता है, खास यहाँ चलता है वो जूँ के मिसल ड्रामा चलता ही रहता है। जान गए हैं कि बरोबर अभी हमारा ड्रामा पूरा होता है। हमको फिर यह शरीर छोड़ना है। ...ये सारी बातें तुम करती हो। कोई दुनिया तो करती नहीं है। दुनिया तो बिल्कुल कुछ भी जानती नहीं है। वो तो सुनकर वण्डर खाती है; क्योंकि ये बातें तो कोई शास्त्रों में हैं नहीं। बाप ने कह दिया है कि तुमको यह समझानी देता हूँ वो कोई शास्त्रों में तो आ ही नहीं सकती हैं। रोज़–2 की इतनी समझानी आ सकती है? कितने वर्ष हुए तुमको समझानी.... अभी कितने वर्ष लगेंगे। इनके शास्त्र बन सकते हैं? तभी तो गाया जाता है कि बरोबर यह तो ज्ञान का सागर है। भले जंगल के कलम लगा दो, सागर को मस कर दो, तो भी इनका यह ज्ञान...। है ना बरोबर! यानी यह कोई सागर की तो बात नहीं है; परन्तु ज्ञान की महिमा करते हैं कि इतनी है, जो तुम सुनते आए हो, समझते आए हो, समझाते आए हो, जो पार्ट बजाते आए हो वो तो प्रैक्टिकल में पार्ट है ना। यह सब तो तुम्हारी बुद्धि में है इस समय में जबकि प्रैक्टिकल में पार्ट बजा रहे हो। मनुष्य क्या शास्त्र से...! गीता और भगवान से क्या, अभी देखा– गीता में क्या लगा हुआ है, भागवत में क्या लगा पड़ा है, रामायण में क्या लगा है...। सभी फालतू बातें हैं ना। सो ही बाबा बोलते हैं– आटे में जैसे लूण। जैसे ये लक्ष्मी–नारायण के चित्र रह गए हैं। सो भी राइटियस चित्र। बरोबर शिव के चित्र भी रहे हुए हैं ठीक। अभी देखो, फिर त्रिमूर्ति ब्रह्मा,विष्णु,शंकर।.. चित्र है; परन्तु पता तो किसको भी नहीं है। त्रिमूर्ति ब्रह्मा इसका अर्थ क्या है? बोला– जी, ब्रह्मा को तीन मुख हैं। एक आदमी को तीन मुख कैसे हो सकते हैं? रावण को तो दस मुख दिखलाते हैं; क्योंकि पाँच मुख वो और वो, समझाते हैं। अब ब्रह्मा के तीन मुख क्या? इसका बिल्कुल कोई अर्थ ही नहीं निकलता है। त्रिमूर्ति बेशक है ब्रह्मा,विष्णु,शंकर। बाप को भूले हुए हैं। ब्रह्मा नाम रखते हैं। देखो, ब्रह्मा का पार्ट बहुत अच्छा है, बड़ा है; क्योंकि बाप ब्रह्मा में आ करके ये सभी राज़ बैठकर समझाते हैं। उनके बदली में त्रिमूर्ति ब्रह्मा और शिवबाबा का नाम ही फिर गुम। बाप बैठकर समझाते हैं तुम समझते हो कि बरोबर बाबा हमको बिल्कुल ही राइट बातें समझा रहे हैं, ट्रुथ समझा रहे हैं। बाकी जो कुछ भी चित्रों में, फलाने में हैं, वो सभी अनट्रुथ हैं। जब अनट्रूथ हो तब तो ट्रुथ आए समझाने के लिए। यानी सच जब झूठ हो तब तो सच समझाने के लिए आए ना। तब तो इतना ये गायन....कि बरोबर परमपिता परमात्मा आ करके ये सहज राजयोग सिखलाते हैं। उनका नाम वो शास्त्र रख दिया हुआ है। बाकी शास्त्रों में जो कुछ उसने बैठ करके लिखा है...। अभी अगर व्यास कहें, व्यास का अर्थ ही है ज्ञान सुनाने वाला। ज्ञान सुनाने वाले को इनको व्यास भी कह सकते हो। व्यास भगवान तो व्यास भी कह सकेंगे ना। जैसे बाबा कहते हैं शंकर आचार्य .... शिव आचार्य चाहिए ना। व्यास सुख देने वाला है, तो तुम जैसे सुख देने वाले बच्चे हो गए। यानी व्यास तुमको सुनाते हैं, तुमको सुखी देवता बनाते हैं। नाम पड़ गया सुखदेव। बरोबर सुखी देवता बनते हो ना। तुमको कौन सुनाते हैं? व्यास कथा सुनाते हैं। इनके बच्चे सुखदेव तो बहुत हैं, जो यह सुन करके सुखी होते रहते हैं। सुख के लिए सुनते हो ना। व्यास माने जो वाणी सुनाते हैं, उनको व्यास भी कहते हैं। मनुष्यों ने तो कुछ भी कुछ लिख लिया। देखो, बाप कहते हैं कि ये शास्त्रों वगैरह में जो कुछ भी लिखा हुआ है, मैं आ करके तुम बच्चों को यथार्थ अर्थ समझाता हूँ और बताता भी रहता हूँ कि फलाने शास्त्र में क्या लिखा है, फलाने चित्र में क्या है, फलाने में क्या है, फिर जज करो। देखो, रॉंग है ना। क्या त्रिमूर्ति ब्रह्मा गा सकते हैं? तो रॉंग हो गया ना। मैं राइट बताता हूँ ना कि ऊपर का बाप कहाँ गया? अभी यहाँ कोई कृष्ण का भी नाम नहीं है। नहीं तो चांस जैसे वज़ीर के नीचे वाइस होते हैं, प्रेसिडेंट के नीचे वाइस। प्रेसिडेंट मरता है तो फिर सेकण्ड को हक मिलना चाहिए ना। यहाँ भी तो शिव के पीछे ब्रह्मा,विष्णु,शंकर हैं तो उनको हक मिलना चाहिए ना। भगवानुवाच। कृष्ण को कैसे हक

मिल गया? ये क्या हुआ? ये तो रॉंग है। ये सभी बात बाप बैठकर समझाते हैं। ये तो बड़ी समझने की बातें हैं। अभी ये भी तुम बच्चे जानते हो सभी बच्चों की इतनी विशाल बुद्धि नहीं है, (जो) इतना धारण कर कोई को अच्छी तरह से युक्तियुक्त समझा सकें। सो भी तो होना ज़रूरी है। बाप समझाते हैं सब एकरस थोड़े ही भर सकेंगे। यहाँ तो मतर्बे में बड़ा फर्क रह सकता है। यहाँ बहुत बैठे हैं जो प्रजा में आने वाले भी हैं। यहाँ थोड़े हैं जो अच्छी तरह से धारण करते हैं, जिसको बिल्कुल ही ज़रा भी संशय नहीं होता है, बिल्कुल ही अच्छी तरह से धारणा करते हैं और धारण कराते रहते हैं, उनको यही तांत है। ...देखते हो कि बरोबर नंबरवार हैं एकदम। कोई–2 अच्छे–2 बच्चों से डिससर्विस हो जाती है। कोई–2 में काम का आ जाता है, कोई में ईर्ष्या का अभिमान आ जाता है। ईर्ष्या ..कम थोड़े ही रहती है। ईर्ष्या कितना नुकसान कर देती है! तो अब ये मम्मा में तो कुछ भी ऐसी बातें नहीं थीं ना। वो तो तुम जानते भी थे बरोबर मम्मा सबसे तीखी है। यूँ तो आई भी पीछे है। पहले तो और बच्चे थे। वो तो पीछे आई है। तुम जानते हो मम्मा बहुतों के पीछे आई है और तीखी चली गई है। बाबा वो भी मिसाल देते हैं कि पीछे बहुत आएँगे, जो बहुतों से तीखे चले जाएँगे। बहुत से तीखे जा रहे हैं। ये तो बड़ी–2 बड़ी ते बड़ी यूनिवर्सिटी है। तुम क्या समझते हो! इसको ही तो यूनिवर्स यानी ये यूनिवर्स है ना, यूनिवर्सिटी। अभी यूनिवर्स के लिए तो गॉड ही है जो पढ़ाते हैं। अभी देखो, ये गॉड फादरली यूनिवर्सिटी यानी गॉड फादर सबको पढ़ाते हैं। यहाँ बैठ करके पढ़ाते हैं। क्या कहते हैं? हे बच्चों! देह सहित तुम जो समझते हो (कि) मैं अफ्रिकन हूँ, एशियन हूँ, इग्लैण्ड हूँ, फलाना हूँ– ये सब अभिमान अभी छोड़ दो। देखो, कहते हैं ना, आवाज़ जाएगा ना, बहुतों से आवाज़ जाएगा। ये सब देह के धर्म हैं– मैं गुजराती हूँ, मैं इस्लामी हूँ, बौद्धी हूँ, फलाना हूँ। ये सब छोड़ दो। अरे! तुम तो पहले आत्मा हो ना। अब ये देह का अभिमान सब छोड़ दो और मामेकम् को याद करो। तो तुम्हारा विकर्म विनाश हो जाए। देखो, सबके लिए कहते हैं ना और आता भी सबके लिए है। बरोबर बाप कहते हैं सबको यानी भगवानुवाच– देह के सभी जो तुम्हारे धर्म हैं, तुम तो आत्मा हो ना। सब देह–अभिमानी बन गए हैं। अरे, आत्माभिमानी भी नहीं हो बिल्कुल ही, देह–अभिमानी बन गए हो। आत्मा के राज़ को नहीं जानते हो बिल्कुल ही। ....देवता जानते हैं कि हम स्टार हैं। यह हमारा शरीर है। हम छोटा–सा, सो तो कहते भी हैं– भृकुटी के बीच में चमकता है अजब सितारा। तो सितारा हुआ ना। लिंग तो नहीं हुआ। अंगुष्ठे मिसल भी तो नहीं है। इतना बड़ा भी तो नहीं हुआ। ये सब समझाते रहते हैं ना कि सबमें ही स्टार के मुआफिक आत्मा है। उसमें फिर कोई जानते नहीं हैं कि आत्मा क्या है? पार्ट कैसा है? कोई भी बुद्धू... हम भी नहीं समझे। जबकि नंबर वन जो पहले था, जो ज्ञान में नंबर वन जाते हैं, वही कुछ भी नहीं समझ सकते थे। आत्मा कैसे हुई है? चमकता है भृकुटी के बीच में तो ज़रूर स्टार है ना। फिर अंगुष्ठे माफिक ये क्या है! देखो, एक–2 बात बिल्कुल ही नई। इसको अनमोल कहा जाता है जिसका कोई मूल्य कथन न कर सके, ऐसी–2 बातें समझाते हैं। वो भी क्यों कहते हैं? बाबा यह जो एक–2 पढ़ाई पढ़ाते हैं, करोड़पति–पदमपति... पता ही नहीं क्या है या कोई टीचर्स, आई.सी.एस. या फलाना पढ़ावे तो क्या ऐसे बन सकते हैं– मनुष्य से एकदम फट देवता? ये सभी समझने की बातें हैं। वो तो समझने के लिए धीर्य भी तो (धरना) चाहिए ना। अधीर तो नहीं होना चाहिए– ....ये क्या ! ये ड्रामा का पार्ट ही बदल गया ! यह पता नहीं हमको गपोड़ा सुनाते रहते हैं, क्या करते हैं। ऐसे बहुत बच्चे हैं जिनकी बुद्धि में ये जाकर पड़ता है। पेशेन्स नहीं है। कई.. चिट्ठी में भी लिख देते हैं– बाबा, ये क्या हुआ, हम कैसे विश्वास करें! ये ड्रामा ही बदल गया, ये हो गया, ये हो गया। हाय–2 मचा देते हैं। तो बाबा उनको क्या करेंगे! .. .एकदम जैसे शॉक में आ गए। उनको भी धीर्य देना पड़ता है। ....धीर्य धरो। तुमको बाप सब कुछ समझा देंगे। अधीर्य मत बनो। अधीर बनने की कोई दरकार नहीं है। बाप जब है बाप के हो तो बाप के तो पास पहुँच जाना है। बाप तो सदैव बिल्कुल ही ठीक रास्ता बताते रहेंगे। विश्वास में जो रहते हैं, अगर विश्वास जाता है तो बड़ा घोटाला पड़ जाता है, दण्ड पड़ जाता है। निश्चय करके फिर तुम लोग कोई बात में संशय क्यों करते हो! हम तो बैठा है ना, तुमको सब कुछ समझाते रहेंगे। तुम्हारी नैया पार तो लगाने की है ना।

जो–2 सपूत बच्चे हैं नैया पार लगानी है और नैया भी पार करने के लिए तुमको पूरा अच्छी... से पुरुषार्थ करना है। औरों की नैया को भी पार लगाना है। उनको भी रास्ता बताना है। बच्चों को ये सभी सर्विस भी तो करनी है ना। इसमें कोई मूँझने की तो बिल्कुल दरकार है नहीं। जैसे बाबा अभी हाजराहजूर है वैसे तुम्हारी मम्मा भी हाजिराहजूर है। आगे चलकर तुम बहुत ही देखेंगे, ये बड़ी–2 बातें सुनाएँगे। आगे चल करके बड़े–2 खेल–पाल होंगे, बड़े–2 चमत्कार होंगे। तुम्हारी बहुत ही खुशबुएँ निकलनी हैं। गाई जो गई हो। अभी मनुष्य से देवता बनती तो सर्विस करके जाती हो ना। तो ज़रूर पीछे गायन होता है। तो सर्विस ही तुम्हारा काम है ना। तुम्हारी सर्विस ड्रामा में नूँध है। अभी टाइम भी तो पड़ा है ना। ऐसे तो नहीं है कि अभी कोई विनाश होता है। हाँ, ये तो बाप ने बताया है देखते रहो क्या–2 होता रहता है। तुम मम्मा का भी देख लेना (कि) आगे चलकर क्या–2 पार्ट बजता रहता है। अरे, बैठे–2 देवियों में से भी क्या–2 होता रहता है। वण्डरफुल बात होगी! ये प्रतिमाएँ चैतन्य भी होकर बात करके गुम हो जाएँगी या उनसे आवाज़ निकलता रहेगा। आगे चलकर सब कुछ देखना चाहिए ना ; क्योंकि ये बहुत वण्डरफुल है। जबकि बाप आते हैं ये नर्क को चेंज करने, बड़ी बात है....अरे वाह! राजधानी बनती है, उनमें...राजाओं को जो साहूकार प्रजा होती है उनको भी नौकर चाहिए। वो कहाँ से आएगी? उनकी चलन ऐसी ही होगी जो तुम बच्चे... और बाबा ने समझा दिया है कि आगे चलकर तुमको फट से मालूम पड़ेगा कि ये फलाना...। तुमको शुरुआत में ही मालूम पड़ता था ये दासी बनने वाली है। बाबा तुमको चुप–2...। वो अभी से ही एकदम बिल्कुल फँक हो जाएगी।.....तुम बच्चों को याद है? बाबा अभी कहते हैं कि पीछे तो प्रत्यक्ष हो जाएँगी जब फंक होने की तो बात ही नहीं रहेगी। पीछे तो फाइनल है, चढ़ ही नहीं सकेंगी। तो तुम जानेंगे कि एकदम यह दासी बनने वाली है, यह फलानी बनने वाली है। बोलती रहेंगी, वो क्या करेंगी! क्योंकि वही जो . ... है वो होगा। क्या करेंगी, पीछे गैलप करने का टाइम तो है नहीं। शुरुआत में बोलने से बिल्कुल ही एकदम फंक हो जाएँगी, बीमार हो जाएँगी कि मेरा ये पार्ट है। चरी बन जाएँगी, दिवानी बन जाएँगी। पीछे तो बाबा ने समझाया है कि तुमको झट मालूम पड़ जाएगा एकदम। जितना आगे जाएँगे इतना बहुत मालूम होता...। बच्चों को अभी भी तो मालूम होता है (कि) कौन–2 नए भी आते हैं, कितना अच्छा उछलते हैं। पुरानी तो एकदम ऐसी ही पड़ी रहती है। तो ये सभी बातें बाप बच्चों को अच्छी तरह से समझाते रहते हैं। थोड़ा धीर्य रहते रहो और बाप को याद करके सर्विस में भी लगते रहो। कोई कहते हैं– बाबा, मैं...। अरे, सर्विस ये कोई ऐसे थोड़े ही है कि तुम झट जा करके कोई को...। इनमें तो एक–2 को समझाने के लिए मेहनत होती है कि जो कुछ भी समझे हुए हैं वो सभी रॉंग है। तुम कह देते हो वेद,ग्रंथ,शास्त्र ये सभी जो कुछ भी हैं...। गीता माता–पिता को रॉंग तो उनके बाल–बच्चे क्रियेशन तो फिर...। अरे, कहते ही हैं (कि) ये वेद वगैरह सभी गीता के पत्ते हैं। ये भी गाया हुआ है (कि) वेद–शास्त्र वगैरह ये भी क्रियेशन हैं। पत्ते क्रियेशन हैं ना। तो अभी सिद्ध होता है कि बरोबर ये सभी पढ़ते आते हैं; परन्तु जबकि कोई यहाँ वाला ब्राह्मण हो, वो मानेगा ना। दूसरा तो बिल्कुल ही नहीं मानेगा। उनको तो देखो कितना अहंकार है। वेदों–उपनिषदों को और देवताओं की मूर्तियों को वो बड़े चक्कर लगाते हैं, परिक्रमाएँ देते हैं। मनुष्य बैठ करके गाड़ियाँ उठाते हैं देवताओं को बैठा करके। जैसे जड़ भरत। जड़ भरत की कथा सुनी है? तो ये जड़ भरत हुए ना यानी गया में, फलाने में गाड़ी पर रख करके जो परिक्रमा देते हैं तो मनुष्य उनको बैठकर के ...तो बरोबर जड़ भरत हुए ना। देवताओं को देखो, हैं तो वो भी मनुष्य; परन्तु वो राज्य करके गए हैं। अब तो वो जो पतित हैं, देखो कितनी उनकी सेवा करते हैं। तो जड़ भरत की कथा है ना। बरोबर प्रैक्टिकल में जड़ भरत है ना। यह जैसे जड़ है ना। इनमें कोई अकल नहीं है बिल्कुल ही, जनावरों के मिसल, उसको क्या कहेंगे! तो देखो फर्क है। मनुष्य देवताओं को गाड़ियों में बिठा करके परिक्रमा देते हैं। अभी तुम जान गए कि क्या बात है, परिक्रमा क्या है। भक्तिमार्ग (में) देखो क्या करते हैं। कोई समझते नहीं हैं किसकी परिक्रमा? रथ में किसको बिठाया? ले जाते हैं, उन लोगों को पता भी नहीं है। बस, ये विश्वनाथ हैं, ये फलाना हैं, ये गणेश हैं। भई लगाओ गणेश को, सिर पर बिठाओ और पालकी पर बिठाओ और चलो।

अरे, है कौन? गणेश और हनुमान तुम्हारा लगता ही क्या है? यह क्या तुम(ने) लगाया है, माथे पर उठाया है? हैं कौन? तुम कौन हो? ये कौन हैं? देखो, जड़ भरत हैं ना। गाड़ी में... .हैं। सभी जड़ भरती हुई।.....कुछ भी अक्ल नहीं। बाप बैठ करके समझाते हैं कि ये जो बैठ करके बनाए हैं, बाप बैठ करके सब बात धीरे–2...। सभी को एक ही दिन में थोड़े ही ज्ञान सुनाया जाता है। हाँ, ये ज़रूर है कि परिचय पूरा मिलता है। बाकी तो पुरुषार्थ करके चलना है; क्योंकि माया का भी धोखा मिलता ही रहता है। कितने बच्चे आकर पूछते हैं– माया.... हमको ये होता है, ये होता है। अरे, ये तो होगा ना। तूफान तभी किसको कहा जाता है! बाप कहते हैं कि तुमको मंसा बहुत तूफान आएँगे, एकदम बिल्कुल खराब आएँगे।. ..परीक्षा तो आएगी ना। अरे, तुम क्या समझते हो, क्या बनते हो, तुमको वण्डर नहीं लगता है! हम अभी बिल्कुल ही कुछ भी नहीं हैं। ....तीन पैर पृथ्वी के नहीं मिल सकते, फिर बैठ करके हम विश्व का मालिक बनते हैं। खेल तो देखो कैसा है! कौड़ी से ये भारत। देखो, भारत क्या है, सब लड़ते हैं....। देश, देश के साथ लड़ते हैं। महाराष्ट्रीयन फिर राजस्थान से लड़ते हैं, फलानी से लड़ते हैं। 'ये हमारी जमीन है', 'हमारी नदी का पानी चाहिए'। इनके ऊपर झगड़ा, इनके ऊपर फसाद, इनके ऊपर कोर्ट में केस। ये सभी क्या है! भारत की दुर्गति कैसे है और भारत क्या था! देखो, ऐसे भारत को तुम बैठ करके क्या बनाती हो। तुमको कितना नशा चाहिए! भला यह तो नशा चाहिए ना– हम भारत को अभी फिर से स्वर्ग बना रही हैं, हैविन बना रही हैं। किसके मत पर? श्रीमत पर। अरे भाई, तभी हेल कैसे बनता है? अरे, आसुरी मत पर, रावण मत पर। बहुत सहज–2 समझने की बातें हैं। ये बुद्धि से धारणा नहीं होती है। अरे, ऐसे बाप को याद भी नहीं करते हैं। लौकिक बाप को...। स्त्री को देखो कितना है। अभी कहते हैं– हम सजनी हैं, पतियों का पति है। पतियों का पति क्यों कहते हैं? क्योंकि पति भी जो अपने को कहते हैं– हम तुम्हारा ईश्वर, गुरू हैं, वो भी तो फिर भी भगवान को याद करते हैं। तो पतियों का पति हुआ ना। जब ये जानते हो कि हमको ये पति ...बड़ा अच्छा शृंगार रहे हैं। पिऊ कहो...या पति कहो। हमको इस ज्ञान रत्न से बहुत ऐसा शृंगार कराते हैं। वाह! हम ये जा करके बनेंगे। तो फिर शृंगार करना चाहिए ना। इसमें गफलत क्यों होती है? परन्तु नहीं, ड्रामाअनुसार सब तो एक जैसा शृंगार नहीं कर सकेंगी; क्योंकि बाबा ने समझाया है– यह तो किंगडम स्थापन हो रही है। अरे भाई, किसकी किंगडम स्थापनहो रही है ? अरे, आदि सनातन देवी–देवताओं की किंगडम यहाँ संगमयुग पर ; इसलिए संगम का कितना....। ये कुम्भ का मेला तो देखो कितना लगता है! कितने मनुष्य आते हैं! बहुत आते हैं ना। तुम विचार करो, आगे चल करके इस कुम्भ के मेले में कितने मनुष्य आएँगे; क्योंकि वो तो नहीं है ना जो चलता आता है। अभी तो कुम्भ का मेला नया लगा है ना। अभी कितना लगेगा, ज़रा विचार करो कि इस कुम्भ के मेले में कितने आएँगे? तुम हैं? सब तो नहीं मिल सकेंगे। इस हॉल में बैठ सकेंगे? नहीं बैठ सकेंगे ना। उस कुम्भ के मेले में तो मैदान ही मैदान लगा पड़ा है, भले कितने भी मनुष्य आओ। यहाँ कहाँ आएँगे इस कुम्भ के मेले में इकट्ठे हो करके। ...कोई वो तो जगह नहीं है स्नान करने की। ये तो बहुत ही समझने की बातें हैं। बच्चे, आगे चल करके बहुत–2 कुछ समझना है। अभी कुछ थोड़ा ही समझे हो। बहुत समझना है; इसलिए धैर्यवत अवस्था बहुत चाहिए और फिर बाप को याद भी करना चाहिए। सदैव हर्षित अवस्था भी चाहिए; क्योंकि अभी तो निश्चय है कि हमने जिसको आधा कल्प याद किया उनके हम बन गए हैं। उनके बन गए हैं (तो) क्या करना है? उनसे वर्सा लेना है। तो खुशी होनी चाहिए ना। वो खुशी कहाँ है? हाँ, होनी है। गाया हुआ है कि अतीन्द्रिय सुख तुम्हें पूछना हो तो गोपीवल्लभ बाप के गोपी–गापियाँ...। अभी देखो, गोप–गापियाँ कहते हैं ना कि फलानी गोपी बाँधी हुई है। गोपी नाम तो यहाँ चलता है ना। वहाँ सतयुग में गोपी नाम कहाँ से आया! वहाँ तो राजाई है, राजा है, रानी है, सबका घर है। वहाँ गोप–गोपियाँ कहाँ से आएँगी? गोप–गोपियाँ नाम यहाँ का है। अगर कृष्ण का भी, तो भगवानुवाच यहाँ है ना, गोप–गोपियों को यहाँ ही सुनाते हैं ना..। बाकी चीर हरण फलाना ये सब क्या है! यहाँ बिल्कुल कितनी मिक्स्चर हो गई। तो उन्हें सब समझने की बुद्धि चाहिए। बुद्धि तो सबकी अपनी–2 है। स्कूल में बहुत ही बच्चे बैठे रहते हैं। अरे, कहाँ भी जाओ, सतसंग में जाओ, वो बैठ करके कथा सुनाएँगे

और वो बैठ करके अपना कथा कहेंगी, बच्चे को दूध पिलाएँगी, अपने घर को याद करेंगी। बस। कहाँ गई थी? सतसंग में गई थी। क्या करके आई? कथा सुनकर आई। क्या कथा सुनकर आई? राम की सीता चुराई गई। पीछे–2 वो रोती थी.....जन्म–जन्मांतर तुम ये गपोड़े सुनते आए हो। गपोड़े हुए ना...। अभी यहाँ कोई विद्वान बैठा हो और नया... हो तो बोलते हैं, यहाँ तो सभी शास्त्रों की निंदा होती है, खण्डन होती है। ऐसे कहेंगे ना। तो इसलिए लॉ नहीं कहता है; क्योंकि ये ज्ञान इन्द्र की सभा है। इसमें कोई भी पतित.....। कुछ समझेगा ही नहीं, उल्टा ही जा करके बकवाद करेंगे एकदम। तो बरोबर वो भी गाया हुआ है कि असुर को अमृत नहीं पिलाना चाहिए। वो इस ज्ञान से समझेगा नहीं। बाहर में जा करके वो एकदम बकवाद करेंगे, भस्मासुर। बरोबर यहाँ भस्मासुर होते हैं ना। समझते कुछ भी नहीं हैं, अंदर आकर बैठते हैं, पीछे बाहर में जा करके हल्ला मचाते हैं। नाम भस्मासुर क्यों पड़ा? क्योंकि इन्द्र की सभा में जा करके, वहाँ ज्ञानामृत की वर्षा होती है, समझते कुछ भी नहीं हैं, वो बाहर में जाकर बोलता है– वाह! बहन–भाई हैं, फलाना हैं, ये क्या कहते हैं! अब ये तो कभी सुना ही नहीं। कोई शास्त्र में ऐसी बातें नहीं हैं। अरे! शास्त्रों में ये बातें कहाँ से आएँगी! नई बात है ना! तो बच्चों को कितना खबरदार रहना चाहिए; क्योंकि आए हैं ज़रूर जिन्होंने तकलीफ दी है, भस्मासुरों ने हंगामा मचाया है। सो भी तो होता ही रहता है। ...बच्चों की बहुत ही समझने की बातें हैं। धीर्यवत् अवस्था बहुत चाहिए। हर्षित अवस्था बहुत चाहिए। बहुत खुशी– अरे! हमको क्या मिल गया, देखो तो सही! जिसको इस दुनिया में बिल्कुल ही कोई नहीं जानते। अच्छा, परमात्मा ; परन्तु है क्या चीज़? यह ज्ञान का सागर क्यों कहते हो? कहते भी हो– सत् है, चैतन्य है, ज्ञान का सागर है। है भी परमपिता परम आत्मा, परमधाम में आत्माएँ रहने वाली हैं; इसलिए उनको परमात्मा कहा जाता है। है तो आत्मा ना। उनमें क्या है, कितना है, कोई कुछ भी नहीं समझते हैं, पाई भी नहीं समझते हैं। एवरीथिंग न्यू बिल्कुल ही। हाँ, ये ज़रूर है मनुष्य से फिर देवता बनते हैं। फिर देवता की तो एम–ऑब्जेक्ट सामने हैं। अच्छा भला, अभी बच्चों को टोली खिलाओ। बहुत कुछ आगे धीर्यवत...। याद, जो सुनते हो उनकी धारणा...। देखो मम्मा भी होती थी, अक्सर करके धारणा के ऊपर बहुत समझाती थी कि धारणा करो। धारणा चाहिए। तुम जो सुनते हो उनकी धारणा करो। बाप जो सुनाते हैं उनकी धारणा करो। धारणा के लिए वाणी चलाती रहती थी। मम्मा धारणा के लिए बहुत अच्छा समझाती थीं। ठीक है ना। ये तो बाप आते हैं..... कभी कहाँ से जाएँगे, कहाँ से उछलेंगे, कहाँ से निकल जाएँगे। लूदड़े होते ना, यहाँ से निकलेंगे, वहाँ से जाकर निकलेंगे। ....नदियाँ तो यहाँ से ही बहती रहती हैं। ये तो उछलें मारते हैं..... और गजगोर करते रहें। अपन को बादल समझो। ऐसे बाबा चाहेंगे। बाँटना भी उनको चाहिए। ये तो झट उठते हैं। ये बादल है मिठाई बनाने का। बहुत अच्छा है। सबसे पहले तो इन लोगों को बाँटना चाहिए। ये है, हमारा रमेश है, यहाँ कौन हैं, हाथ उठाओ जो युगल कितना भीष्म ब्रह्माचारी बने हैं? देखें। ....जो नई जोड़ी बनी है और पवित्र रहती है? (किसी–2 ने कहा– रमेश) वो तो बहुत निकलेंगे। और भी कोई है? देखो, और एक ये, दूसरा ये दो। अच्छा, ऊषा कहाँ गई है?..... .शो करने वाले तो ये हुए ना। वो बहुतों से पूछते हैं कि ऐसे कैसे हो सकता है! कौन–2 हैं? ....बाबा के पास बहुत चिट्ठियाँ आती हैं। तो वण्डर है! वो समझते हैं ये हो ही नहीं सकता है। अभी हम ही नहीं रह सके तो ये कौन हैं फिर! उनको ये तो मालूम नहीं है ना कि इनको पढ़ाने वाला कौन है; क्योंकि एतबार (नहीं होगा कि) भगवान आकर पढ़ाते हैं जब तलक तुम उनको अच्छी तरह से समझाओ नहीं। जब एक भगवान सिद्ध करो तब कृष्ण उड़ जावे भगवानुवाच। ...हम से, इसको यूँ कहेंगे ना– और तुम से। कितने समझदार बने हो बात मत पूछो। इतनी रोशनी आ गई है नंबरवार पुरुषार्थ अनुसार। कितना नशा चढ़ा हुआ है। हम सारे मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूलवतन, इनमें फिर रहने वाले की और इनकी बायोग्राफी....नॉलेज कितना जान गए।